निमंत्रण

INTERNATIONAL WEBINAR ON LANGUAGE, RESEARCH AND TEACHING : A DIALOGUE ON HINDI

Organized by Research Committee
Bharati College,University of Delhi
&
Cauldron Magazine Society (Hindi Desk)
Jesus and Mary College,University of Delhi

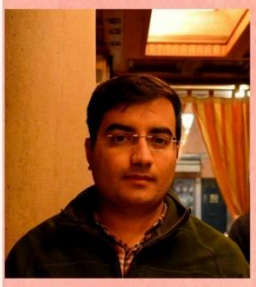

Vipul Goswami
University of Bonn,
Germany, Amity- German

Nicolas Boin Principato
INALCO
Paris,France

Jameela Khmelkova
Kyiv Gymnasium of Oriental Languages
Ukraine

On 17th Oct 2020
@ 2pm
https://meet.google.com/cii-zwdu-miy

Dr Rekha Sapra
Principal
Bharati College
Dr Shailza Singh
Convenor, Research Committee

Dr Sandra Joseph
Principal
JMC
Dr Anupama Srivastava
Convenor, Cauldron Magazine Society

SCHEDULE OF THE PROGRAMME

Welcome note:
Dr. Shailza Singh
Convenor, Research Committee, Bharati College, University of Delhi

Introduction :-

Dr. Sandra Joseph
Principal, JMC
University of Delhi.

Dr. Rekha Sapra
Principal, Bharati College,
University of Delhi.

Chair
Dr. Anupama Srivastava & Dr. Prem Kumari Singh

Main Speakers :-

- जामीला ख्मेलकोवा , पूर्वी भाषाओं का कीव जिम्नेज़ियम, यूक्रेन ।
  Hindi Research at elementary level :
  Innovative perspective.

- Vipul Goswami, University of Bonn,
  Germany, Amity- German.
  विदेशी छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तिका का विकास,
  कोपेनहागेन के कुछ अनुभव ।

- Nicolas Boin Principato - INALCO, PARIS, FRANCE
  Hindi Research and teaching at Paris.

Thanks-giving and conclusive note:
Dr. Prem Kumari Singh

Convenors :
Dr. Shailza Singh
Dr. Anupama Srivastava
October 17, 2020 i.e. on Saturday at 2pm
Platform: Google Meet

REPORTS ON THE EVENT

INTERNATIONAL WEBINAR ON LANGUAGE, RESEARCH AND TEACHING:
A DIALOGUE ON HINDI

Organized by
Research Committee, Bharati College, University of Delhi
&
Cauldron Magazine Society (Hindi Desk), Jesus and Mary College, University of Delhi

Reporting in English

On 17th of October, 2020 the research committee of Bharati College in collaboration with the Hindi desk of Cauldron Magazine of Jesus and Mary College came together to organize an event which centered around the use of language in research and teaching across national and international academic spaces. This event was encouraged to be conversed in Hindi to highlight the significance of Hindi as a language and its growing prevalence over the world. We had a diverse set of speakers in the panel that came from across different countries and backgrounds. The speakers were Dr. Vipul Goswami from University of Bonn, Germany, Mr. Nicolas Boin Principato, Inalco, France and Jameela Khmelkova, Kjive, Gymnasium of Oriental, Ukraine.

Dr. Vipul Goswami was our first speaker. His conversation surrounded the fundamental questions of "Why should any individual learn the language Hindi"? To this he answers that the language Hindi becomes a window through which one can take a clear glance at the cultural, social and economic aspects of a modern India. His second question concerns the special techniques of teaching the language to an individual whose native language is not Hindi. He further emphasized on a simplistic understanding of the language.

The art of simple teaching and learning was further accentuated by our second speaker Jameela Khmelkova. Ms. Khmelkova has been very keen interest in genre of Hindi movies which has influenced her to study and know the language. The first part of her conversation centered around the anthropology of children's learning process which was followed by her accounts on Hindi movies and songs. She talks about how children's textbooks are constructed to enhance their Hindi learning process. The process of teaching she comments needs to pay heed to the children's attention, the way they identify the language and their level of response. She further intelligently highlights that it is important for us to understand how the film and songs influences on a language learning process. The children can easily identify the context of a particular song or a movie even without having expertise in a language. Therefore, she argues that such practices could precipitate their learning process and also teach them values of a particular culture. Our third speaker Nicolas Boin begins the conversation by stating his experience as learner and a teacher of the Hindi language. He states that because of the structural differences in the language of Hindi and French,

it is difficult for French speaking individuals to learn Hindi, because of its oral expression. And therefore, he echoes Dr. Vipul's statement which called for a different approach to teaching the language to foreign individuals. He advocated for the "communicative approach" to learning a language. He states that the "interpretative approach" of learning language is an inadequate method to learn a language, because it focuses on the structure of the language rather than performing the language. He further argues that "performing the text" would embody the emotions of the individual which could make the learning process a holistic experience.

Moreover, in the next segment of his talk, he highlights the importance of the content the students are learning, where literature is being replaced by newspaper article in contemporary times. While this transformation does allow a student to comprehend the event that takes place at present times, nevertheless it leaves a gap between the history of the country and what is happening in the present. Therefore, he emphasizes on an understanding of the language, its history and its culture which through paying attention to its literary text. It allows one to know how Hindi as a language has evolved, and who shaped the language.

The conversation came to an end with participants asking questions to the speakers regarding their future aspirations of teaching Hindi and in what ways can the essence of the language be taught and learnt. The speakers answered them with outmost brilliance and enthusiasm which brought this event to a successful end.

(*Report prepared by Ms. Samhita Das, Assistant Professor, Department of Sociology, Bharati College*)

Reporting in Hindi

शोध समिति भारती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय और कॉलड्रोन मैगज़ीन समिति (हिंदी डेस्क) जीजस एंड मैरी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 17 अक्तूबर 2020, को "International webinar on Language research and Teaching : A dialogue on Hindi" (भाषा अध्ययन और शोध) विषय पर अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन गूगल मीट के माध्यम से संपन्न हुआ | मुख्य अतिथि के रूप में बॉन विश्वविद्यालय जर्मनी से विपुल गोस्वामी, यूक्रेन से जमीला खेमेल्कोवा तथा पेरिस शहर के रिसर्च इंस्टिट्यूट इनाल्को में कार्यरत निकोलस बोइं प्रिन्सिपाटो शामिल हुए | गोष्ठी का संचालन भारती महाविद्यालय की शोध समिति की सदस्य डॉ. प्रेम कुमारी एवं जीजस एंड मैरी कॉलड्रोन मैगज़ीन समिति की अध्यक्ष डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव ने किया | गोष्ठी की अध्यक्षता भारती महाविद्यालय की शोध समिति की अध्यक्ष डॉ. शैलजा ने किया |

भारती महाविद्यालय की शोध समिति का सदैव यह प्रयास रहता है कि किस तरह से दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्य महाविद्यालयों के साथ एक वैचारिक सम्बन्ध स्थापित किया जाए | शोध, अध्ययन अध्यापन और समाज को जानने के लिए कितना महत्वपूर्ण है इस महत्ता को जानने के लिए शोधसमिति समय-समय पर, विविध विषयों पर कार्यशाला और गोष्ठी का आयोजन करती रहती है जिससे महाविद्यालय में शोध और अध्ययन का वातावरण तैयार किया जा सके | समाज से जुड़े विभिन्न विषयों से शोध को जोड़ा जाये जिससे अध्ययन को एक नवीन गति प्रदान की जा सके | इसी कड़ी में इस गोष्ठी का आयोजन किया गया है|

जीजस एड मैरी महाविद्यालय की डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव सर्वप्रथम वक्ताओं के स्वागत के साथ गोष्ठी की शुरुआत करती हैं | भारती महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. रेखा सपरा विधिवत सभी वक्ताओं का स्वागत करती हैं |तदुपरान्त पहले वक्ता के रूप में बॉन विश्वविद्यालय जर्मनी से विपुल गोस्वामी अपनी बात रखते हैं तथा तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं के माध्यम से उन्होंने अपने विचार रखे, सर्वप्रथम कि विषय की चुनौतियाँ क्या हैं,दूसरा वे महत्त्वपूर्ण बिंदु कौन से हैं जिसपर पाठ्यपुस्तक के निर्माण के समय ध्यान रखा जा सकता है |तीसरे एवं अंत में वे अपनी पाठ्यपुस्तक के अंश की चर्चा करते हैं |

गोष्ठी की इसी चर्चा को दूसरी वक्ता यूक्रेन की जमीला खेमेल्कोवा आगे बढ़ाती हैं | जो एक प्राथमिक विद्यालय में हिंदी की शिक्षिका हैं साथ ही हिंदी के पाठ्यक्रम के लिए स्वयं पुस्तकों का लेखन करती हैं, वे भी अपनी पुस्तकों के लेखों के माध्यम से बताती हैं कि एक विदेशी भाषा के रूप में हिंदी की क्या महत्ता है और उसके लिए पाठ्यक्रम में किन-किन बिन्दुओं की आवश्यकता है | साथ ही केवल भाषा ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति एवं सिनेमा कैसे हिंदी को सीखने में मदद करते हैं कई हिंदी फ़िल्में विद्यार्थियों को दिखा कर हिंदी के प्रति एक लगाव जगाया जा सकता है | हिंदी सिनेमा के संवाद कैसे हिंदी को प्रभावी बनाते हैं, साथ ही भारतीय त्यौहार जैसे होली,दीपावली का आयोजन वे अपने विद्यार्थियों के साथ करती हैं जिससे भारत और भारतीय भाषा को समझा जा सके |

अंतिम वक्ता के रूप में पेरिस शहर के रिसर्च इंस्टिट्यूट इनाल्को में कार्यरत निकोलस बोइं प्रिन्सिपाटो अपनी बात साँझा करते हैं इन्होने अपना स्नातक हिंदी और संस्कृत भाषा में किया है, परास्नातक हिंदी भाषा में किया, वर्तमान में ये इनाक्लो से कवि कुँवर नारायण के काव्य का भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन विषय पर पीएच.डी कर रहें हैं | साथ ही इनाक्लो में परास्नातक हिंदी के विद्यार्थी का अध्यापन भी करते हैं | अपने वक्तव्य में निकोलस फ़्रांस में हिंदी की स्थिति पर हमारा ध्यान केन्द्रित करते हैं साथ ही हिंदी के अध्यापन में भाषा और व्याकरण में महत्त्व पर बात करते हैं | एक अध्ययनकर्ता के रूप में हिंदी के पठन-पाठन में किन-किन समस्याओं का सामना निकोलस को करना पड़ा उसपर चर्चा करते हुए वे बताते हैं फ्रेंच और हिंदी दोनों बिलकुल ही भिन्न भाषा है और एक फ़्रांसिसी के रूप में हिंदी को सीखना इनके लिए एक चुनौती से कम नहीं रहा सबसे बड़ी चुनौती उच्चारण को लेकर हुई| एक अध्यापक के रूप में निकोलस यह सुझाव देते हैं कि विदेशी भाषा के रूप में हिंदी को सिखाते हुए एक वार्तालाप की शैली का प्रयोग करना चाहिए और यह वार्तालाप बहुत छोटे-छोटे वाक्य रूप में होने चाहिए | पाठ को नाट्यरूपांतरण के माध्यम से भी समझाना आवश्यक है | जिससे विद्यार्थी भावनात्मक रूप से उस पाठ से जुड़ सकें |

इस प्रकार हमारे तीनों वक्ताओं से अपने अनुभव से माध्यम से अपने विचार हमारे सामने रखे इसके उपरान्त प्रश्नोत्तरी के द्वारा श्रोताओं ने अपने प्रश्न वक्ताओं के समक्ष प्रस्तुत किये | निश्चित ही एक विदेशी भाषा के रूप में हिंदी का अध्यापन विदेशों में एक बड़ा ही दिलचस्प अनुभव है | जैसा की हमारे वक्ताओं ने स्पष्ट किया है और साथ ही यह भारत के लिए गौरवपूर्ण विषय है कि भारत की भाषाएँ आज विदेशी भूमि पर फलफूल रहीं हैं | इसी एक साथ डॉ. प्रेम कुमारी सिंह भारती महाविद्यालय शोध समिति की सदस्या के रूप

में सभी वक्ताओं का धन्यवाद ज्ञापन करती हैं और एक रोमांचकारी अनुभव के साथ इस गोष्ठी का समापन होता है |

(*Report prepared by Dr. Shivani Saxena, Assistant Professor, Department of Hindi, Bharati College*)